# प्रथम अध्याय

## राघवजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

अ) डा. रांगेय राघव का व्यक्तित्व

प्रस्ताविका

1. वंश परिचय
2. जन्मस्थल, जन्मतिथि
3. नाम
4. पारिवारिक व्यवस्था
5. कौटुंबिक संस्कार.
    1) पिता
    2) माता
    3) भाई और मौसी
    4) श्रवणकुमार ( सरमन )
6. शादी और संतति
7. शिक्षा एवं कार्य
    1) शिक्षा
    2) कार्य
8. अन्य विषय का अध्ययन.
9) व्यक्तित्व के पहलु
    1) शारीरिक गठन
    2) वेशभूषा.
    3) अभिरूचि
    4) साहित्य लेखन योजना
10. मृत्यु

आ) डा. रांगेय राघव का कृतित्व

प्रस्ताविका

1. प्रेरणास्त्रोत
2. प्रथम रचना
3. रचनाओं की सूची
4. लघु - शोध प्रबंध के सम्बधित रचनाएँ

निष्कर्ष

## प्रथम अध्याय

## " रांगेय राघव का व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय "

### अ) डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तित्व

**प्रस्ताविका**

हिंदी साहित्य क्षेत्र में तपोनिष्ठ साहित्यकार डॉ. रांगेय राघव बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं अप्रतिहत श्रम शक्ति के प्रतीक स्वरूप हैं । उनकी विचारधारा एवं दृष्टिकोण प्रगतिशील है । राघवजी का व्यक्तित्व उपन्यास - जगत् में बड़ा महत्व रखता है । सर्वहरा वर्ग और मानव - जीवन के प्रति उनकी अटूट आस्था है । राघवजी मानवतावादी उपन्यासकार थे । सत्य का अन्वेषण उनके जीवन का प्रमुख अंग रहा है । उनका जीवन प्रयोगवादी रहा है । शोषित, दलित, पीड़ितों के प्रती उनकी अपनत्व की भावना दिखाई देती है । राघवजी ने अपने साहित्य के माध्यम से सामान्तवादी नीति के विरूद्ध शोषितों को संघर्ष की प्रेरणा दी है । उनके उपन्यास जहाँ स्नेह, त्याग, उदारता आदि उदात्त भावनाओं से परिपूर्ण है, वही वे विद्रोह एवं क्रान्ति की भावनाओं से पोषित भी हैं । मानव धर्म एवं समाजवादी समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए उन्होंने साहित्य का सृजन किया ।

। वंश परिचय

डॉ. रांगेय राघवजी के पूर्वज मूलतः तिरूपति ( तामिलनाडू, आंध्रप्रदेश ) के निवासी थे । राघव परिवार लगभग तीन सौ वर्ष पहले तिरूपति से मथुरा आया था । राघवजी के पूर्वजों ने वृंदावन में एक मन्दिर बनवाया । इनके पूर्वजों में से किसी एक की विद्वत्ता से प्रसन्न होकर जयपुर के महाराज ने उन्हें ' वैर ' नामक गाँव की जागीर उपहार स्वरूप देकर उन्हे सम्मानित किया था । यह ' वैर ' गाँव भरतपुर जिला, राजस्थान बयाना से लगभग बाईस मील की दूरी पर है । राघव परिवार की अनेक पीढ़ियाँ वैर गाँव में रहती आयी है ।

डॉ. रांगेय राघव के पूर्वज प्रसिद्ध धर्मप्रवर्तक श्री. रामानुजाचार्य की वंश परम्परा के अन्तर्गत आते हैं । [1] धर्म के क्षेत्र में इस परिवार की विशेष रूचि थी । राघवजी के पूर्वज लेखनकार्य में प्रवीण थे । उनके द्वारा लिखित अनेक तामिल और संस्कृत की पाण्डुलिपियाँ अब भी वैर में उनके पास सुरक्षित है । राघवजी के पिताजी श्री. टी. एन्. रंगाचार्य एक विद्वान और

प्रसिद्ध पुजारी थे । ' यहाँ ( वैर ) आकर उन्होंने अपने आराध्य देवता जिन्हें वे दक्षिण भारत से ले आये थे मंन्दिर बनाकर ' सितारामजी ' की मूर्ति की प्रतिष्ठा की । [2] श्री. टी. एन. के आचार्य राघवजी के बड़े भाई आज भी उस मंन्दिर की देखभाल करते है । श्री. टी. एल. एन. आयार्च राघवजी के सबसे बड़े भाई असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति थे ।

डॉ. रांगेय राघव के पूर्वजों का क्रम निम्नानुसार है ।

श्री. निवासाचार्य

श्री. वीरराघवाचार्य

श्री. वरदाचार्य

श्री. नारायणाचार्य

**श्री. विजयाराघवाचार्य**

श्री. रंगाचार्य

1. श्री. टी. एन. एल. आचार्य
2. श्री. टी. एन. के. आचार्य
3. श्री. टी. एन. व्ही. आचार्य

अतः सातवी पीढ़ि में रांगेय राघव हुए हैं । [3]

2. जन्मस्थान - जन्म स्थिती.

डॉ. रांगेय राघव का जन्म आगरा के बाग मुजप-फरखाँ मोहल्ले में श्री. बाजेश्वरनाथजी के मन्दिर के बिल्कुल पास ही पीपल वृक्ष की छाया से आच्छादित घर में 17 फरवरी 1923 में सुबह 4 बजे हुआ । " इस समय वहाँ एक दुकान है, उसका नाम है ' आसराम बलदेवदास ॲन्ड सन्स । ' इस सम्बन्ध में डॉ. रांगेय राघव के परिवार से सम्बन्धित श्यामा कहारिन ने जानकारी दी कि इसी घर में रांगेय राघव का जन्म हुआ था । " [4] आगे चलकर उन्होंने घर बदल दिया । श्री. बागेश्वरनाथ मन्दिर के पास से एक सड़क गुजरती है, वहाँ डॉ. रांगेय राघव मार्ग ' नाम का फलक लगा हुआ है । उनके ' स्मृतिचिन्ह ' के रूप में इस फलक को माना जाता है ।

3. नाम

घर में सबसे छोटे होने के कारण राघवजी को अनेक स्नेहिल नामों से पुकारा जाता था । घर के लोग और मित्र मंडली उन्हें प्यार से ' पप्पू ' कहकर ही बुलाया करते थे । इनके जन्म का नाम त्र्यंबक नरसिंह वीर राघवाचार्य ( श्री. टी. एन. व्ही. आचार्य ) था । राघवजी ने अपने विशाल नाम को संक्षिप्त रूप इस प्रकार दिया - रंगाचार्य पिता का नाम था, जिससे बना ' ' रांगेय ' और ' वीरराघव आचार्य ' का संक्षेप ' राघव ' किया । इन दोनों से मिलकर बना हुआ नाम है - रांगेय राघव ' । " कुछ लोग उन्हे आचार्य भी कहते थे । " [5] वैर गाँव में किसान ' छोटे महाराज ', ' भैया ' ' स्वामी ' आदि नामों से संबोधित करते थे । किन्तु इन नामों का प्रत्यभन अधिक न रहा । " एक बार भारतभूषण अग्रवाल ने उन्हें उनके विशाल दाक्षिणात्य कवित्यहीन नाम का आतंक दिखाया, जिसकी वजह से उनकी कविता सादर लौटा दी जाती थी । तभी से डॉ. रांगेय राघव ने अपना साहित्यिक नाम रखा ' रांगेय राघव । ' [6] आज हिंदी साहित्य जगत् में वे ' रांगेय राघव ' इस नाम से परिचित है ।

4. पारिवारीक व्यवस्था

संयुक्त और आधुनिक परिवार का संगम राघव परिवार में देखने को मिलता है । यह परिवार शिक्षित एवं सुसंस्कृत है । इस परिवार की रहन - सहन एवं वेश-भूषा भारतीय संस्कृति और परम्परा के अनुरूप है । राघवजी के पिताजी श्री. रंगाचार्य धार्मिक व्यक्ति थे । प्राय: वे मन्दिर में रहा करते थे । अनेक भाषा के ज्ञाता होने के बावजूद उनकी वेष-भूषा बहुत ही साधारण थी । वे राघव परिवार के पोषक थे । पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार का भार तीनों भाईयों ने अपने कंधे पर उठाया ।

इस परिवार पर नई सभ्यता का प्रभाव था । विवाह की वैयक्तिक स्वतंत्रता सब सदस्यों को प्राप्त थी । लेकिन यह परिवार जाति - पाति के विषय में पुरातन मतवादी भी था ।

इस वजह से किसी का भी आन्तर्जातीय विवाह नहीं हुआ है । " राघव परिवार की यह विशेषता रही है कि वह छोटे - से - छोटा और बड़े - से - बड़ा कार्य करने के लिए सदैव तत्पर रहता है । " [7] संस्कृत भाषा का विशेष प्रेम होते हुए भी अंग्रेजी माध्यम में इन लोगों की शिक्षा हुई ।

5. कौटुम्बिक संस्कार

डॉ. राघवजी के पिता ' वैर ' गाँव के जागीरदार थे । इस कारण उनका परिवार सुसम्पन्न था । पिताजी सीतारामजी के मन्दिर के मालिक थे । अतः वे बहुत ही धार्मिक व्यक्ती व्यक्ति थे और पूजा - पाठ करते थे । इस वजह से उनका परिवार सुसंस्कृत और सुशील भी था । राघवजी पर इन संस्कारों का प्रभाव पड़ा । परिवार के कुछ सदस्यों के संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान निम्नांकित है ।

1) पिता

डॉ. रांगेय राघव के पिता संस्कृत के विद्वान थे । काव्यशास्त्र का ज्ञान उन्हे था । वे राघवजी को पिंगलशास्त्र का महत्व बताकर बार - बार पिंगलशास्त्र पढ़ने की आवश्यकता को समझाते । श्री. रंगाचार्य फारसी भाषा के खास ज्ञाता थे एवं फारसी में शायरी भी करते थे । राघवजी को कवित्व करने की प्रेरणा एवं प्रोत्साहन पिताजी से प्राप्त हुआ था । वे भारतीय संस्कृति के विशेष ज्ञाता थे । राघवजी पर पिता के गुणों का प्रत्यक्ष प्रभाव था पड़ा । " अपने स्वर्गीय पिता श्री. रंगाचार्य के धैर्य और निर्भीकता की छाप उनके मुख पर किशोरावस्था से ही थी । ' [8] राघवजी के व्यक्तित्व के निर्माण में पिता के संस्कार पाए जाते हैं ।

2) माता

डॉ. राघवजी की माता का नाम ' कनकम्मा ' था । उनकी मातृभाषा कन्नड होते हुए भी उनकी विशेष रूची ब्रजभाषा और साहित्य में थी । बाद में इन्होंने हिंदी, अंग्रेजी,

संस्कृत, तामिल भाषा का भी अध्ययन किया । वह बहुत ही सुशील, सुसंस्कृत, दयालु, उदार, सीधी, सरल तथा विशाल -हृदय महिला थी । माँ के इन्ही गुणों ने ' राघवजी ' को मानवतावादी दृष्टी प्रदान की थी । युग-प्रवाह को देखकर माँ राघवजी को साहित्यकार के रूप में देखना नही चाहती थी । राघवजी के व्यक्तित्व के निर्माण में उनकी माता के संस्कार दिखाई देते हैं ।

3) भाई और मौसी

श्री. टी. एन. एल. आचार्य और श्री. टी. एन. के. आचार्य ये दोनों राघवजी के बड़े भाई थे । उन्हें एक छोटी बहन भी थी, जिसका नाम ' इंदिरा ' था । लेकिन वह शैशव काल में ही स्वर्ग सीधार गयी । सबसे छोटे होने के कारण दोनों बड़े भाई राघवजी को बहुत प्यार करते थे । राघवजी को बहुत दिनों तक मातृ-सुख मिलता रहा । मगर माँ की बीमारी के कारण मौसी आतंगा द्वारा ही राघवजी का पालन - पोषण हुआ । मौसी उनसे विशेष स्नेह करती । मौसी के व्यक्तित्व से भी राघवजी बहुत प्रभावित थे ।

4) श्रवणकुमार ( सरमन )

डॉ. रांगेय राघव के परिवार में श्रवणकुमार एक सेवक था । राघवजी श्रवणकुमार को ' सरमन ' के नाम से पुकारते थे । राघवजी उसके साथ भाई जैसा बर्ताव करते थे । श्रवणकुमार राघवजी की केवल सेवा ही नहीं करता बल्कि साहित्य में मदद भी करता था । " हिंदी के तद्भव शब्दों का ज्ञान उन्हें विशेष रूप से सरमन से ही प्राप्त हुआ । " [9] राघवजी के अंतिम समय में श्रवणकुमार बम्बई में उनके पास था । " श्रवणकुमार की डॉ. रांगेय राघव के प्रति असीम श्रद्धा रही हैं । इसलिए उसने वैर में सन 1974 में " डॉ. रांगेय राघव अध्ययन केंद्र " की स्थापना की और आज भी वह केंद्र कार्य कर रहा है । " [10]

[university stamp]

6. शादी और संतति

डॉ. रांगेय राघव विवाह के इच्छुक नहीं थे क्योंकि वे साहित्य सेवा करना चाहते थे । लेकिन सामाजिक एवं पारिवारीक परम्पराओं का दबाव उन पर था ।

राघवजी के बड़े भाई श्री. टी. एल. एन. आचार्य की शादी श्रीकृष्ण स्वामी आय्यंगार की कन्या शकुंतला के साथ बम्बई में सन 1954 में हुई । रिश्तेदारी के कारण श्रीमती सुलोचना बहन से मिलने आती थी तो कभी - कभी राघवजी भी उनके घर आते थे । उस समय राघवजी और श्रीमती सुलोचना में वार्तालाप होता था । राघवजी ने सुलोचनाजी को नजदीक से देखा, समझा, परखा और सुलोचना के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा । सुलोचना ने भी स्वीकृती दी । मई 1956 को माटुंगा, बम्बई में डॉ. राघवजी के साथ सुलोचना का विवाह सम्पन्न हुआ । विवाह के पश्चात राघवजी ने सुलोचना की पढ़ाई पर विशेष ध्यान दिया । सुलोचना ने राघवजी से प्रेरित होकर ' रामनारायण रूइया कॉलेज ' से बी. ए. की उपाधि हासिल की । सुलोचना को साहित्य में रूचि थी । उनकी अभिलाषा थी कि उनका जीवनसाथी साहित्यिक या महान कलाकार हो । डॉ. राघवजी को पाकर उनकी अभिलाषा सफल हुई ।

डॉ. राघवजी का दाम्पत्य जीवन बहुत-ही सुखद और सम्पन्न रहा । सुलोचना राघवजी की साहित्यिक प्रेरणा थी । सुलोचना ने 8 फरवरी 1960 में एक पुत्री को जन्म दिया, जिसका नाम ' सीमन्तिनी ' रखा । राघवजी की मृत्यु के बाद श्रीमती सुलोचना ने समाजशास्त्र में एम. ए किया । खुद अपने पैरों पर खड़ी होकर बच्चों का पालन-पोषण किया । डॉ. राघवजी की कृतियों को छपवाकर साहित्य सेवा की । सुलोचना ने आज जो प्रगति की है, सम्मान, प्रतिष्ठा एवं पद पाया है, डॉ. राघवजी ही उसका आधारस्तंभ और प्रेरणास्त्रोत है ।

7. शिक्षा एवं कार्य

डॉ. रांगेय राघव की विशेष रूचि साहित्य में थी । सच्चे ज्ञानसाधक के रूप में

उन्होंने शिक्षा प्राप्त की है । लेखन और अध्ययन उनका प्रमुख कार्यक्षेत्र है । पीएच्. डी. जैसी उच्चतम विश्वविद्यालयीन उपाधि उन्होंने हासिल की । डॉ. राघवजी की शिक्षा एवं कार्य का सामान्य परिचय निम्नांकित है ।

1) शिक्षा

डॉ. राघवजी के पिता श्री. रंगाचार्य ने युग-प्रवाह को देखकर अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दिलाना चाहते थे । उन्होंने आगरा के ' सेण्ट जान्स स्कूल ' में अपने बच्चों को दाखिल किया क्योंकि वैर गाँव में अंग्रेजी माध्यम का स्कूल नहीं था । हायस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरान्त राघवजी ने ' सेण्ट जान्स कॉलेज ' में बी. ए. तक अध्ययन किया । बाद में सन 1944 में हिंदी में एम. ए. किया । एम. ए. करने के पश्चात उन्होंने डॉ. हरिहरनाथ टंडन के निर्देशन में शोध-कार्य प्रारंभ किया । ' गुरू गोरखनाथ और उनका युग ' शोध प्रबंध का विषय था । राघवजी कुछ दिनों तक शान्तिनिकेतन में रहे । वहाँ उन्होंने डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के निर्देशन में अपना शोध कार्य पूरा किया । सन 1948 में डॉ. राघवजी को पीएच्. डी. की उपाधि आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त हुई ।

2) कार्य

डॉ. राघवजी ने सन 1942 में आगरा के स्थानीय हिंदी दैनिक ' सन्देश ' में संपादन कार्य किया । शोध-प्रबंध की आवश्यक सामग्री इकठ्ठी करने के लिए उन्होंने अनेक यात्राएँ की । वे वाराणसी भी गये । राघवजी ने सन 1946 में द्वैमासिक ' निर्माण ' के सम्पादन कार्य की जिम्मदारी संभाली । उन्होंने कुछ फिल्मों की पटकथाएँ भी लिखी । प्रोडयुसर श्री. सत्यपाल शर्मा उनके मित्र थे । शर्माजी के आग्रह के कारण डॉ. राघवजी बम्बई आये । वहाँ उनकी ' लंका दहन ' कहानी पर फिल्म भी बनाई गई । अकाल ग्रस्त बंगाल की यात्रा उन्होंने 19-20 वर्ष की आयु में की थी । इसके पश्चात् राघवजी ने ' तूफानों के बीच ' इस अविस्मरणीय रिपोर्ताज का सृजन किया ।

8. अन्य विषय का अध्ययन

डॉ. रांगेय राघव ने केवल पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन नहीं किया बल्कि अन्य विषयों का भी अथक परिश्रम से अध्ययन किया । राघवजीने संस्कृत की साहित्यिक पुस्तकों का अध्ययन किया । इन्हे भारवि, कालिदास, भवभूति आदि कवि अधिक प्रिय थे । पण्डित जगन्नाथ राज की ' भामिनी विलास ' का पद्यानुवाद किया । उन्होंने प्रायः अंग्रेजी लेखकों और कवियों की रचनाओं का गहन अध्ययन किया और अपने विचारों को व्यक्त किया ।

प्रारम्भ से राघवजी का विशेष लगाव चित्रकला के प्रति था । ' पहले वे चित्रकला की ओर आकृष्ट हुए और उन्होंने तरूण वय में अनेक चित्र बनाये । ' 11 चित्रकला के विशेष अध्ययन के लिए राघवजी शान्तिनिकेतन भी गये । कम समय में उन्होंने चित्रकला का अध्ययन किया । राघवजी ने चित्रकला का इतना ज्ञान संपादन किया कि चित्रकला उनके जीवन का एक अंग बन गयी । सन 1948 में मेघदूत के सभी श्लोकों के भाव-चित्र बनाये । राघवजीने ' ' भामिनी विलास ' के पद्यानुवाद के साथ जीवन के अन्तिम दिनों में उसके सभी श्लोकों के भाव-चित्र भी खींच दिये थे ।

राघवजी का इतिहास विषयक चिन्तन ' प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास ', ' महायात्रा ', अंधेरा रास्ता ', ' रैन और चंदा ', अंधेरे के जुगनू ' आदि कृतियों मे बिखरा पड़ा है ।

संगीत भी राघवजी को बहुत भाता था । लेकिन कण्ठ उनका साथ नहीं देता था । इस कारण उनके मन में हीनता का भाव पैदा हुआ था । शास्त्रीय संगीत का ज्ञान उन्हे अत्यल्प था । फिर भी राघवजी कुछ गुनगुनाया करते थे ।

पुरातत्व में उन्हें विशेष रूचि थी । वैर गाँव के खण्डहरों में वे प्रायः संध्या समय घूमने जाते और वहाँ की मूर्तियों का निरीक्षण करते थे । इस क्षेत्र में उनकी निन्दा और उपेक्षा भी की गई, लेकिन इसके बावजूद भी राघवजी ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त की ।

9) व्यक्तित्व के पहलु

व्यक्तित्व एक ईकाई है । उसे विभाजित नहीं किया जा सकता । लेकिन अध्ययन की सुविधा के लिए उसके अन्तरंग और बहिरंग ये दो भेद किये जाते हैं । ' व्यक्तित्व का बाहय पक्ष आकृति, वेशभूषा, रहन-सहन, खान-पान, व्यसन-व्यवहार, हास-परिहास, बोलचाल, आदि से सम्बंध ' रखता है । उसका आन्तरिक पक्ष स्नेह, सद्भाव, विविध मनोवृत्तियों तथा स्वभाव आदि से सम्बद्ध है । " [12]

डॉ. रांगेय राघव बहुमुखी प्रतिभाशाली साहित्यकार थे । विविध पहलुओं से उनका व्यक्तित्व आकर्षक बन गया था ।

1) **शारीरिक** गठन

डॉ. रांगेय राघव आकर्षक एवं मनमोहक व्यक्तित्व से सम्पन्न थे । उनका वर्ण अत्यंत गौर था । शरीर सुकुमार एवं सुगठित और ललाट उन्नत था । अंगुलिया अद्भूत थी । आँखे चमकिली और विशाल थी । उन में मोहकता और एक तरह की आभा थी जो देखनेवालों को मंत्रमुग्ध करने की शक्ति रखती थी । " लम्बा शरीर, साफ चेहरा, उन्नत और स्निग्ध ललाट एवं नुकीली नाक, नक्काशी की हुई **मुसक्साती** भवें, सतेज विशाल नेत्र, जिसमें कभी - कभी शरारत भी बहक जाती थी । " पतले पतले गुलाबी नाजूक होठ और ठोड़ी । सरिता की गम्भीर भवरों को समेटती हुई । यह सब कुछ मिलकर हो तो इन्द्रधनुष्य बनता है और वह इन्द्रधनुष्य ही था । ऐसी सौम्य, शालीन मुखाकृति एक नवीन सृष्टी रही थी । "' [13] मानो तामिलनाडू और ब्रजभूमी की छबि ने एकाकार होकर एक नवीन व्यक्तित्व की सृष्टी की हो । " [14] उनकी शारीरिक सुन्दरता मृत्यु तक बनी रही । सिर्फ उनके सिर के बाल गिरने लगे थे । राघवजी बालों के प्रति बहुत ही सचेत थे । बीमारी के बाद इनका स्वास्थ गिरता गया ।

2) वेशभूषा

डॉ. रांगेय राघवजी का शरीर बहुत-ही आकर्षक एवं सुंदर था, लेकिन उनकी वेशभूषा अत्यन्त साधारण थी । राघवजी बचपन से ही वेशभूषा के प्रति उदास थे । छात्र - जीवन में वे पतलून और शर्ट पहनते थे । छात्र दशा के पश्चात कुर्ता और पायजामा पहनने लगे । कभी - कभी धोती भी पहनते थे । जाड़ो के दिनों में ठण्ड से बचने के लिए कन्धे पर शाल लेते और कानों पर मफलर लपेटे रहते थे । कभी शेरवानी पहनते थे । जब बाल गिरना शुरू हुआ तब टोपी पहनने लगे थे । राघवजी को काली टोपी अधिक पसन्द थी । उनके पैरों में चप्पल रहती । दाढ़ी और मूँछ प्रायः साफ करते थे । दाढ़ी रखने का शौक भी उन्हे हुआ था जिसके कारण उनका सौंदर्य अधिक निखरता था । मगर ये शौक ज्यादा दिनों तक नहीं टिक पाये । " उन दिनों उसने दाढ़ी रखी थी । गोरे बदन की पृष्ठभूमि में घनी काली दाढ़ी सहित वह बहुत ही मनमोहक लगता था । " [15] राघवजी की चाल में भी एक विशेषता थी । वे धोती के पटल का एक सिरा हाथ में थामें मंद-मंद एक-सी चाल चलना पसन्द करते थे । लोग उनकी चाल को देखते और उसमें रुचि भी लेते थे ।

3) अभिरूचि

" डॉ. रांगेय राघव प्रकृति सौन्दर्य के उपासक थे । " [16] प्रकृति - सौन्दर्य के प्रति उनकी विशेष रूचि थी । जब वे घूमते तब मित्रों को अपनी ओर आकृष्ट करते थे । अपना अधिकतर समय मित्रमंडली में गँवाते थे । उनकी कविता तथा उपन्यासों में प्राकृतिक चित्रण प्रतिकात्मक रूप में प्रचुर मात्रा में मिलता है । वे प्रकृति निरीक्षण को ज्यादा महत्व देते थे । प्राकृतिक रम्य स्थल इन्हे अधिक प्रिय थे जैसे सिकन्दराबाद, आगरा ।

राघवजी रेस्त्रांबाज के बड़े शौकीन थे । उनके लिए रेस्त्रां केवल चाय पीने की जगह नहीं थी बल्कि विचार - विनिमय, हँसी - मजाब की जगह थी । शाम के समय राघवजी अपने मित्रों के साथ रेस्त्रां में जाते थे । रेस्त्रां में उन्हे अपने लेखन के लिए कुछ मात्रा में सामग्री भी प्राप्त होती थी । बागमुज्जफरखाँ मोहल्ले के बाबू नत्थीलाल का रेस्त्रां बहुत ही सामान्य रेस्त्रां था,

मगर राघवजी को ये बहुत प्रिय था । यह रेस्त्रां सन 1949 के आसपास बन्द हो गया । इसके अतिरिक्त आगरा में दरोगा, नापा, गोवर्धन नाम के तीन रेस्त्रां थे, जहाँ राघवजी हमेशा जाया करते थे । राघवजी जहाँ भी जाते वही किसी विशिष्ट रेस्त्रां से उनका लगाव हो जाता था ।

राघवजी धूम्रपान करते थे । लेकिन सिगरेट पीने के अलावा वे किसी अन्य व्यसन को महत्व नही देते थे । परिवार के सभी सदस्यों के सामने सिगरेट पीने से जरा भी हिचकिचाते नही बल्कि उनकी माँ ने भी उन्हें सिगरेट पीने की छूट दे रखी थी । वे कभी - कभी दो-दो सिगरेट जलाकर एक साथ पीते थे । राघवजी सिगरेट को अपनी लेखनी की प्रेरणा मानते थे, और कहते - " सिगरेट लिखने समय एक ऐसा इन्टरवेल देती है जिससे आदमी खूब सोच सकता है । " [17]

बीमारी के दिनों में उनके सभी स्नेही तथा पत्नी ने इन्हें सिगरेट का व्यसन छोड़ने का आग्रह किया । लेकिन उनका यह व्यसन अन्त तक नही छूटा । " शायद यही सिगरेट उनके प्राण ले बैठी । " [18]

" डॉ. राघवजी बड़े मधुर व्यंगकार थे । " [19] उनका व्यंग और विनोद बहुत तीखा एवं पैना भी होता था । इस समय वे किसी मर्यादा या सीमा को स्वीकार नही करते थे । " रांगेय राघव अपने साहित्यसेवी मित्र मण्डली के साथ प्रसंगोचित बौद्धिक व्यंग - विनोद करते थे । उनमें श्री. राजनाथ शर्मा, डॉ. कुंदनलाल उत्प्रेता, डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, डॉ. घनश्याम अस्थाना, डॉ. रामविलास शर्मा, इनके व्यंग - विनोद के भक्ष्य बनते थे । " [20]

डॉ. रांगेय राघव बड़े सहृदय और संवेदनशील व्यक्ति थे । दीन - दलित, पीड़ित, शोषितों के प्रति इनके हृदय में अपार श्रद्धा और स्नेह था । वे बहुत ही उदार थे । हमेशा गरीबों की मदद करते थे । इनकी इस उदारता के कारण कभी - कभी लोग इन्हे झूठी कहानी सुनाकर अनुचित लाभ उठाते थे । " इनकी जेब सदैव दूसरों के लिए खुली रही थी । " [21] इस वजह से आर्थिक कठिनाइयों का सामना भी राघवजी को करना पड़ा । उनकी कृतियों में इनकी अधिक सहानुभूति शोषित , दलित, पीड़ितों के प्रति रही है । राघवजी को किसी भी प्रकार का

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

प्रदर्शन पसन्द नही था । वे कर्म करते रहने को ही अधिक महत्वपूर्ण मानते थे । राघवजी के इस व्यक्तित्व की छाप उनके उपन्यासों में सर्वत्र दिखाई देती है ।

4) साहित्य लेखन योजना

डॉ. राघवजी ने हिंदी साहित्य की हर एक विधा में लेखन किया है । इनकी लिखने की एक तरकीब थी । पहले वे अध्ययन करते और उसके आधारपर योजना या रूपरेखा तैयार करते । इसके पश्चात साहित्य का लेखन करते थे । राघवजी जब मानसिक थकान महसूस करते तब वे कोई मनोरंजनात्मक ग्रंथ पढ़ते थे, जैसे देवकीनन्दन खत्री का ' चन्द्रकान्ता संतति ' विशेष रूपसे पढ़ते थे । यह ग्रंथ उन्हे अधिक प्रिय था । शौचालय में भी वे पत्र - पत्रिकाएँ पढ़ लेते थे । पुस्तक को बिना पढ़े राघवजी का नित्यक्रम पूर्ण नही होता था ।

10) मृत्यु

डॉ. रांगेय राघव हमेशा किसी न किसी बीमारी के शिकार हो जाते थे । युवावस्था में अनिद्रा और पेचिस की बीमारी लग गई थी । लेकिन अनिद्रा को वे वरदान मानते थे । सन 1957 के बाद वे बहुत ही अस्वस्थ रहने लगे । 4 अप्रैल 1962 में उनकी कैन्सर की बीमारी का निदान हो गया । बहुत इलाज कराया परन्तु सब व्यर्थ गया । उनकी हालत अत्यन्त गम्भीर हुई थी । मृत्यु के साथ वे संघर्ष करते रहे । आखिर इतने सारे प्रयासों के बावजूद बम्बई में बुधवार 12 सितंबर, 1962 सायं 3 बजकर 56 मिनट पर वे सदा के लिए सबको छोडकर स्वर्ग सीधार गये । " मृत्यु के बाद बम्बई में ही क्वीन्स रोड़ स्थित चरनवाड़ी सोनापूर के स्मशान में उनका दाह संस्कार किया । " [22]

किसी भी साहित्य पर साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव दिखाई देता है । प्रायः कृतियाँ तथा साहित्यकार में परस्पर सम्बन्ध रहता है । अतः डॉ. रांगेय राघवजी के व्यक्तित्व गठन में उनके परिवार का योगदान रहा है ।

## आ) डॉ. रांगेय राघव का कृतित्व :

### प्रस्ताविका

डॉ. रांगेय राघव बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न लेखक थे । साहित्य की हर विधा पर उन्होंने कुछ - न - कुछ लिखा है । साहित्येत्तर विषयों में भी उन्हें रूचि थी । राघवजी ने बहुत ही अल्प आयु में प्रचुर मात्रा में साहित्य का सृजन किया । अल्पावधी में हिंदी साहित्य जगत् में एक ' सृजनात्मक साहित्यकार ' के रूप में ख्याति प्राप्त की । उनकी रचनाओं में समाज, राजनीति, ज्ञान - विज्ञान समस्त शाखाओं का चित्रण रहा है । अतः राघवजी को ' ज्ञान का उपासक' कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा ।

अपनी रचनाओं की सूची स्वयं डॉ. राघवजीने बनवायी थी । यह रचनाओं की सूची यथावत दी जा रही है । इसके बावजूद जो अन्य प्रकाशित - अप्रकाशित कृतियाँ है तथा जिनका केवल उल्लेखमात्र हुआ है, क्रम से उन सब का परिचय दिया जा रहा है ।

### 1) प्रेरणास्त्रोत

साहित्यलेखन की प्रेरणा डॉ. राघवजी को अपने परिवार के सदस्यों से मिली थी । साथही उनसे राघवजी ने कुछ न कुछ जरूर सीखा था । राघवजी के मन में जो साहित्यिक छिपा था उसे जगाने का काम इनके पिता रंगाचार्य ने किया था । पिताजी संस्कृत के पण्डित थे । राघवजी के पूर्वज भी किसी न किसी कला में निष्णात रहे हैं । उनकी माता साहित्यिक अभिरूची रखनेवाली महिला थी । उनके नाना कुशल वीणावादक एवं चित्रकार थे । मामा मृदंगवादन मे कुशल थे । वैसे देखा जाय ते राघवजी के परिवार के सभी सदस्य प्रतिभावान और बुद्धिमान थे । और ये सब इनके प्रेरणास्त्रोत रहे हैं । इसके बावजूद वेदना की अनुभूति, महानता के प्रति आदर, जिज्ञासा, महत्वाकांक्षा ये इनकी प्रेरणा के कारण रहे थे ।

2) प्रथम रचना

डॉ. रांगेय राघवजी के सृजनात्मक कार्य का आरम्भ सन् 1937 के आसपास 14 वर्ष की अवस्था में हुआ । छात्र जीवन में ही उन्होंने लिखना आरम्भ कर दिया था । उनकी प्रथम रचना जो एक गीत थी, साप्ताहिक विश्वमित्र, कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका में छपी थी । इसी काल में उन्होंने पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित होकर ' बोलते खण्डहर ' और सन् 1938 में ' अंधेरे की भूल ' नामक रचनाएँ लिखी । द्वितीय विश्वयुद्ध एवं रूस की क्रान्ति पर आधारित ' अजेय खण्डहर ' ( काव्यसंग्रह ) तथा ' साम्राज्य का वैभव ' ( कहानी संग्रह ) नामक दो संकलन प्रकाशित किये । ' तूफानों के बीच ' ( रिपोर्ताज ) और ' विषादमठ ' ( उपन्यास ) ' हंस ' में उनकी ये रचनाएँ छपी थी । यहाँ से वे गद्य लेखक के रूप में ज्ञात हो गये ।

3) रचनाओं की सूची

अपनी रचनाओं की सूची स्वयं डॉ. रांगेय राघवजी ने तैयार की थी । वह सूची डॉ. कमलाकर गंगावणेजी को सुलोचनाजी के द्वारा प्राप्त हुई है । डॉ. कमलाकर गंगावणेजी ने ' कथाकार रांगेय राघव ' इस शोध-प्रबंध में सूची क्रम दिया है , वही सूची दी जा रही है ।

| क्रम | डॉ. रांगेय राघवजी द्वारा रचनाओं की तैयार की गई सूची | रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण |
|---|---|---|
| 1. | व्ही. पी. ए. | व्ही. पी. ए. का संकेत - विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा के लिए है । |
| 1. | विजयिनी | यह पुस्तक विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा से छपी है । |
| 22. | इन्द्रधनुष्य | वही |
| 3. | संस्कृति और समाजशास्त्र<br>भाग - 1 गो<br>भाग - 2 | यह पुस्तक श्री. गोविंद शर्मा के सहयोग से लिखी गई है । मूल सूची में ' गो ' का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है । |
| 4. | संस्कृति और मानवशास्त्र गो | वही |
| 5. | अपराधशास्त्र, श्या | यह पुस्तक श्री. श्याम शर्मा के सहयोग से लिखी गई है । मूल सूची में ' श्या ' का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है । |
| 6. | सामाजिक समस्याएँ और विघटन श्या | वही |
| 7. | सामाजिक समस्या और रीतिरीवाज मु | यह पुस्तक श्री. मुरारी प्रभाकर के सहयोग से लिखी गई है । मूल सूची में ' मु ' का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है । |
| 8. | महाकाव्य विवेचन | यह पुस्तक विनोद पुस्तक मन्दिर में छपी है । |
| 9. | काव्य, यथार्थ और प्रगति | वही |
| 10. | समीक्षा और आदर्श | वही |
| 11. | बन्दुक और बीज | वही |
| 12. | बैने और पायलफूल | वही |

UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

| क्रम | डॉ. रांगेय राघवजी द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची | रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण. |
|---|---|---|
| 13. | मेरी भव बाधा हारो | यह पुस्तक विनोद पुस्तक मंन्दिर, आगरा में छपी है । |
| 14. | रत्ना की बात | वही |
| 15. | लोई का ताना | वही |
| 16. | लखिमा की आँखे | वही |
| 17. | जब आवेगी काली घटा | वही |
| 18. | धूनी का धुआ | वही |
| 19. | काव्य, कला और शास्त्र | वही |
| 20. | देवकी का बेटा | वही |
| 21. | यशोधरा जीत गई | वही |
| 22. | भारती का सपूत | R.P.S.D. संकेत राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के लिए है । |
| 23. | तूफान | टेम्पेस्ट ( शेक्सपियर ) |
| 24. | एक सपना | अ मीड समर नाईट ड्रीम - शेक्सपिअर |
| 25. | परिवर्तन | टेमिंग ऑफ दि शेक्सपीयर |
| 26. | तिल का ताड़ | मच डो अबाउट नथिंग शेक्सपीयर |
| 27. | भूलभूलैया | दि कॉमेडी ऑफ एरर्स शेक्सपीयर |
| 28. | निष्फल प्रेम | लव्हज लेबर्स लास्ट शेक्सपीयर |
| 29. | बारहवीं रात | ट्वेल्थ नाईट शेक्सपीयर |
| 30. | जैसा तुम चाहो | एज यू लाईक इट शेक्सपीयर |
| 31. | वैनिस का सौदागर | मर्चेंट ऑफ वेनिस - शेक्सपीयर |

| क्रम | डॉ. रांगेय राघवजी द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची | रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण. |
|---|---|---|
| 32. | रोमियों ज्यलियट | रोमियों एण्ड ज्युलियट, शेक्सपीयर |
| 33. | ज्यूलियस सीजर | ज्यूलियस सीजर - शेक्सपीयर |
| 34. | सम्राट लियर | किंग लियर - शेक्सपीयर |
| 35. | मेकबेथ | मेकबेथ - शेक्सपीयर |
| 36. | हेमलेट | हेमलेट - शेक्सपीयर |
| 37. | आथेल्लो | आथेल्लो - शेक्सपीयर |
| 38. | मुद्राराक्षस | मुद्राराक्षस - विशारवदत्त. |
| 39. | मृच्छकटिक | मृच्छकटिक - शुद्रक |
| 40. | मन के बन्धन | लायालिटिज - गाल्सवर्दी |
| 41. | दशकुमारचरित | दशकुमारचरित - दण्डी |
| 42. | संसार के महान उपन्यास | इस पुस्तक में विश्व साहित्य के श्रेष्ठ उपन्यासों का संक्षिप्त कथासार दिया है । |
| 43. | नकली उपग्रह राकेट और बाहरी आकाश | स्पेस - वायती ले यह पुस्तक ज्ञान-विज्ञान माला के अंतर्गत ' राकेट की कहानी ' शीर्षक मे छपी है । |
| 44. | मेरी प्रिय सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ | यह रचना उनके जीवनकाल में नही छपी । |
| 45. | आधुनिक कविता में प्रेम | यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है । |
| 46. | आधुनिक कविता में विषय और शैली | वही |
| 47. | पाँच गधे | वही |
| 48. | बन्धन मुक्ता | इस रचना की पाण्डुलिपी श्रीमती सुलोचना राघव ने प्रकाशनार्थ राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के पास दी है । |

| क्रम | डॉ. रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची | रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण. |
|---|---|---|
| 49. | पक्षी और आकाश | यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी हैं । |
| 50. | राह न रूकी | वही |
| 51. | राई और पर्वत | वही |
| 52. | पथ और आकाश | यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है। |
| 53. | छोटी - सी बात | यह पुस्तक हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा. लि., दिल्ली से छपी है । |
| 54. | कब तक पुकारूँ | यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स से छपी है । |
| 55. | धरती मेरा घर | वही |
| 56. | प्रोफेसर | वही |
| 57. | कल्पना | वही |
| 58. | दायरे | यह पुस्तक हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा. लि. से छपी है । |
| 59. | आग की प्यास ' एपीबीडी ' | यह पुस्तक आशोक पाकेट बुक्स, दिल्ली से छपी है । ' एपीबीडी ' का संकेत इसी संदर्भ में दिया है । |
| 60. | होरेस काव्य कला ' डीयु ' | इस पुस्तक की पाण्डुलिपी श्रीमती सुलोचना राघव के पास है । ' डीयु ' का अर्थ स्पष्ट नहीं है। |
| 61. | केपीजे काव्यकला | केपीजे जयपुर के किसी प्रकाशन का नाम नहीं है, जिसका ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है । |

| क्रम | डॉ. रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची | रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण. |
| --- | --- | --- |
| | एस. पी | ' एस. पी. ' का ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु यह ज्ञात है कि मुलाक्षर ' एस. पी. ' प्रकाशन संस्थाएँ - सरस्वती प्रेस, बनारस, सरस्वती प्रकाशन, सदर आगरा, से इनकी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं । |
| 62. | घरौंदा | इसका प्रथम संस्करण सन् 1946 में सरस्वती प्रेस, बनारस से छपा है । बाद में यह राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपा है । |
| 63. | तुलसीदास का कथाशिल्प | यह पुस्तक म. प्र. साहित्य प्रकाशन, विलासपुर से सन् 1959 में प्रकाशित हुई । |
| 64. | उबाला | यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है । |
| 65. | विरूदक | यह पुस्तक साहित्य कार्यालय, आगरा से छपी है । |
| 66. | कालविजय | वही |
| 67. | समुद्र के फेन | वही |
| 68. | पराया | राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली |
| 69. | राह के दीपक | वही |
| 70. | मेघावी | वही |
| 71. | पांचाली | वही |
| 72. | किरणे बुहारलों | यह सचित्र काव्य संग्रह है । इसकी पाण्डुलिपी सुलोचना राघवजी के पास है । |

| क्रम | डॉ. रांगेय राघवजी द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची | रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण. |
| --- | --- | --- |
| 73. | युरापीय कथाएँ | यह सचित्र काव्य संग्रह है । इसकी पाण्डुलिपी सुलोचना राघवजी के पास है । |
| 74. | ईरानी कथाएँ | वही |
| 75. | एशियाई कथाएँ | वही |
| 76. | फारशी कथाएँ | वही |
| 77. | फ्रेन्च कथाएँ | वही |
| 78. | हैलेनिक कथाएँ | वही |
| 79. | आयव्हन्ही | आयवन्ही - सर वॉल्टर स्काट, इस पुस्तक की पाण्डुलिपी सुलोचना राघव के पास है । |
| 80. | एण्टीगोने | उण्टीगोने - सोफोक्लिज । |

उपर्युक्त रचनाओं के साथ - ही - साथ राघवजीने अन्य भी रचनाएँ की है । वे इस प्रकार है -

4) लघु - शोध प्रबंध से सम्बन्धित रचनाएँ

साहित्य की सभी विधाओं पर डॉ. रांगेय राघवजीने प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है । अधिक जानकारी के लिए यहाँ उपन्यास आदि रचनाओं का क्रम, प्रकाशन वर्ष के आधारपर किया है । इनमें से कुछ रचनाएँ बहुत पहले लिखी गई हो और कई वर्ष बाद छपी हो । लेकिन यहाँ प्रकाशन वर्ष पर ध्यान केंद्रित किया गया है । इसका विभजन ' उपन्यास ' तथा ' कहानी ' के रूप में किया गया है ।

1) उपन्यास

| क्रम | उपन्यास का शीर्षक | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|
| 1. | घरौन्दे | सन् 1946 |
| 2. | विषादमठ | सन् 1945 |
| 3. | मुर्दों का टीला | सन् 1948 |
| 4. | सीधा सादा रास्ता | सन् 1951 |
| 5. | चीवर | सन् 1951 |
| 6. | हुजूर | सन् 1952 |
| 7. | काका | सन् 1953 |
| 8. | अंधेरे के जुगनू | सन् 1954 |
| 9. | उबाल | सन् 1954 |
| 10. | देवकी का बेटा | सन् 1954 |
| 11. | यशोधरा जीत गई | सन् 1954 |
| 12. | लोई का ताना | सन् 1954 |
| 13. | रत्ना की बात | सन् 1954 |
| 14. | भारती का सपूत | सन् 1954 |
| 15. | बोलते खण्डहर | सन् 1955 |
| 16. | अंधेरे की भूल | सन् 1955 |
| 17. | प्रतिपादन | सन् 1956 |
| 18. | बौने और घायल फूल | सन् 1957 |
| 19. | कब तक पुकारूँ | सन् 1957 |
| 20. | लखिमा की आँखे | सन् 1957 |

| क्रम | उपन्यास का शीर्षक | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|
| 21. | बन्दूक और बीन | सन् 1958 |
| 22. | राई और पर्वत | सन् 1958 |
| 23. | पक्षी और आकाश | सन् 1958 |
| 24. | राह न रूकी | सन् 1958 |
| 25. | जब आवेगी काला घटा | सन् 1958 |
| 26. | छोटी सी बात | सन् 1959 |
| 27. | धूनी और धुआँ | सन् 1959 |
| 28. | पथ का पाप | सन् 1960 |
| 29. | महायात्रा : अंधेरा रास्ता | सन् 1960 |
| 30. | महायात्रा : रैन और चंदा | सन् 1960 |
| 31. | मेरी भव बाधा हरो | सन् 1960 |
| 32. | धरती मेरा घर | सन् 1961 |
| 33. | दायरे | सन् 1961 |
| 34. | आग की प्यास | सन् 1961 |
| 35. | कल्पना | सन् 1961 |
| 36. | आँधी की नींवे | सन् 1961 |
| 37. | पतझर | सन् 1962 |
| 38. | प्रोफेसर | सन् 1962 |
| 39. | पराया | सन् 1962 |
| 40. | आखिरी आवाज | सन् 1962 |

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

2) कहानी संग्रह

| क्रम | कहानी संग्रह का शीर्षक | प्रकाशन वर्ष |
|---|---|---|
| 1. | साम्राज्य का वैभव | सन् 1947 |
| 2. | समुद्र के फेन | सन् 1947 |
| 3. | देवदासी | सन् 1947 |
| 4. | जीवन के दाने | सन् 1949 |
| 5. | अधूरी मूरत | सन् 1949 |
| 6. | अँगारे न बुझे | सन् 1951 |
| 7. | ऐय्याश मुर्दे | सन् 1953 |
| 8. | इन्सान पैदा हुआ | सन् 1957 |
| 9. | पाँच गधे | सन् 1960 |
| 10. | एक छोड़ एक | सन् 1963 |
| 11. | मेरी प्रिय कहानियाँ | सन् 1970 ( प्रथम सं. )[23] |

निष्कर्ष :

डॉ. रांगेय राघव का व्यक्तित्व प्रभावशाली रहा है । उनके पूर्वज मूलतः तामिलनाडू ( आंध्रप्रदेश ) के निवासी थे । लगभग तीन सौ वर्ष पहले उनका परिवार मथुरा आया था । जयपुर के महाराज ने इनके पूर्वजों को ' वैर ' नामक गाँव की जागीर उपहार स्वरूप प्रदान की थी। राजस्थान के भरतपुर जिले में वैर में राघव परिवार की अनेक पीढ़ियाँ रहती आयी है । इनके परिवार के सदस्य धार्मिकवृत्ति के थे । उनके माता-पिता सुसंस्कृत एवं सुसम्पन्न थे, जिसका प्रभाव डॉ. रांगेय राघव पर पड़ा हुआ दिखाई देता है । राघवजीका विवाह भी रिश्तेदार की बेटी सुलोचना

से हुआ । उनका वैवाहिक जीवन सुखपूर्ण रहा है । उन्हें ' सीमान्तिनी ' नामक एक बेटी है । राघवजी की शिक्षा आगरा में हुई तथा पीएच. डी. की उपाधि उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हासिल की । राघवजी ने दैनिक ' संदेश ' तथा द्वैमासिक ' निर्माण ' के संपादन का कार्य किया । कई फिल्मों की पटकथाएँ भी लिखी । साहित्य के अलावा राघवजी को संगीत, इतिहास, पुरातत्व, चित्रकला में भी अधिक रूची थी । सुगठित शरीर, अति साधारण वेशभूषा, प्रकृति प्रेम, संवेदनशीलता आदि के कारण उनका व्यक्तित्व मनमोहक था तथा विविध पहलुओं से राघवजी का व्यक्तित्व आकर्षक बना रहा है ।

साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रमाण उसके साहित्यपर रहता है । उसी प्रकार डॉ. रांगेय राघव के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव दिखाई देता है । राघवजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे । अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है कि हिंदी साहित्यजगत् में डॉ. रांगेय राघवजी का, साहित्य खास अहमियत रखता है तथा पाठकों के मन को प्रभावित कर उन्हें सोचने के लिए विवश करता है ।

KOLHAPUR

## संदर्भ


1) साहित्य संदेश : जनवरी - फरवरी 1962, राघवजी स्मृति अंक. पृ. 344

2) डॉ. कमलाकर गंगावणे : कथाकार रांगेय राघव : जीवन एवं व्यक्तित्व. पृ.18

3) वही. पृ. 18

4) वही. पृ. 18-19 डॉ. गंगावणेजी को श्यामा कहारिन से प्राप्त. ।

5) ' निष्ठा ' रांगेय राघव अंक : 1966 पृ. 28

6) साहित्य संदेश : जनवरी - फरवरी 1963, रांगेय राघव स्मृति अंक. पृ. 337

7) डॉ. लालासाहब सिंह - डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास. पृ. 4

8) साहित्य संदेश : जनवरी - फरवरी 1963 रांगेय राघव स्मृति अंक पृ. 344

9) डॉ. लालासाहब सिंह - रांगेय राघव और उनके उपन्यास, डॉ. लालासाहब सिंह को डॉ. रांगेय राघवजी के निकटवर्ती लोगों से प्राप्त समाचार.

10) डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव. पृ. 20

11) डॉ. प्रकाशचंद्र गुप्त - आज का साहित्य. पृ. 230

12) डॉ. कमलाकान्त पाठक - मैथिलीशरण गुप्त, व्यक्ति और काव्य. पृ. 57

13) साहित्य संदेश : जनवरी - फरवरी 1963, रांगेय राघव स्मृति अंक. पृ. 337

14) डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव, पृ. 27

15) साहित्य संदेश : जनवरी - फरवरी 1963, रांगेय राघव स्मृति अंक. पृ. 337

16) डॉ. लालासाहब सिंह - डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास. पृ. 14

17) साहित्य संदेश : जनवरी फरवरी 1963, रांगेय राघव स्मृति अंक. पृ. 337-38

18) वही पृ. 38

19) डॉ. लालासाहब सिंह - डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास. पृ. 12

20) डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव पृ. 29

21) डॉ. लालासाहब सिंह - डॉ. रांगेय राघव और उनके उपन्यास. पृ. 15

22) डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव. पृ. 32

23) वही. पृ. 38-40.